

नवीन सामाजिक शोध

इस अंक में

1. विदिशा जिले में कृषिगत.....डॉ. छाया चन्द्रवंशी, —6
2. MENTAL HEALTH AND AYURVEDA.....Dr.Ritu Singh—17
3. महिलाओं में अपराधअमृतासिंह बुंदेला —24
4. अपराधी महिलाओं को पुनः.....अमृतासिंह बुंदेला—28
5. बालिकाओं में अपराध.....अमृतासिंह बुंदेला—31
6. JOB SATISFACTION AND.....Pragati Choudhary—34
2. SAVE GIRL'S.....RAJ YADAV—39

सलाहकार मंडल

- प्रो. डॉ. आर्ह.एस. चौहान पूर्व कुलपति, वरफतवस्ताह एरु
मोच विश्वविद्यालय मोपाल-म.प्र. | फोन: 0755-2424777
- प्रो. डॉ. विनोद पी. सक्सेना , पूर्व कुलपति, चीवाची विश्वविद्यालय
ग्वाशियर म.प्र. | फोन 0755-2628055
- प्रो. डॉ. संतोष कुमार श्रीवास्तव
पूर्व कुलपति डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर-म.प्र.
- प्रो. डॉ. राजपाल सिंह सदस्य सलाहकार यूनीसी (उच्च शिक्षा)
भारत सरकार मो. 9425028689
- ,डॉ.आर.एम श्रीवास्तव पूर्व प्रार्चय, मोतीलाल विज्ञान महा विद्यालय
मोपाल मध्यप्रदेश मानव मो.9826286410

संपादकीय

दिल्ली में फिर से लागू होगा ऑड-ईवन! जानलेवा स्तर तक पहुंच गया है प्रदूषण का स्तर

दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण की समस्या बेहद गंभीर होती जा रही है। पड़ोसी राज्य हरियाणा और पंजाब में लगातार किसानों के द्वारा जलाई जा रही पराली की वजह से दिल्ली की आबोहवा बहुत जहरीली हो गई है। ऐसे में 1 नवंबर से राजधानी दिल्ली में प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान लागू किया जाएगा। इसके अलावा फिर से ऑड-ईवन को लागू करने पर भी विचार किया जा सकता है।

ऑड-ईवन फिर से हो सकता है लागू

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अगर आने वाले दिनों में दिल्ली की हवा में सुधार नहीं होता है तो फिर से ऑड-ईवन को लागू किए जाने पर विचार किया जा सकता है। आपको बता दें कि दिल्ली में इससे पहले भी ऑड-ईवन व्यवस्था को लागू किया जा चुका है।

दिल्ली में लागू होगा ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान

वहीं दूसरी तरफ मंगलवार को ईपीसीए के चेयरमैन भूरे लाल ने भी प्रदूषण की गंभीर समस्या को देखते हुए 1 नवंबर से दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान लागू करने का ऐलान किया है। साथ ही उन्होंने कहा है कि अगर दिल्ली और आसपास के इलाकों में अगर अगले कुछ दिनों में हालात नहीं सुधरे तो निजी वाहनों पर रोक लगा दी जाएगी। ऐसे में जनता को पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ही सहारा लेना होगा।

भयावह स्तर पर पहुंचा पीएम 2.5

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के जारी आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में वायु गुणवत्ता 397 दर्ज की गई जो %गंभीर% स्तर के करीब है और इस मौसम का सबसे ज्यादा प्रदूषण है। दिल्ली के 17 इलाकों में वायु गुणवत्ता गंभीर स्तर पर जा पहुंची है। एसएएफआर के अनुसार मंगलवार को दिल्ली में पीएम 2.5, 251 और पीएम 10 का स्तर 453 दर्ज किया गया है। हवा में बढ़ने वाले बारीक प्रदूषण के कण स्वास्थ्य के लिए ज्यादा चिंताजनक हो सकते हैं।

“विदिशा जिले में कृषिगत आधारभूत सुविधाएँ एवं खाद्यान्न उत्पादन के बीच सम्बंधों का विश्लेषण”

डॉ. छाया चन्द्रवंशी,
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र),
सरोजनी नायडू शा.
गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
भोपाल

रेखसिंह मेहर, शोध
छात्र (अर्थशास्त्र),
शास. हमीदिया कला
एवं वाणिज्य
महाविद्यालय भोपाल।

डॉ. शरद तिवारी,
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र),
शास. हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय
भोपाल

प्रस्तावना –

किसी भी देश, क्षेत्र अथवा स्थान विशेष के आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता विशेषकर भूमि का महत्व अत्यधिक होता है। भूमि जो सभी आर्थिक गतिविधियों का आधार है, का उचित प्रबंधन एवं उपयोग महत्वपूर्ण है। भूमि का महत्व सिर्फ कृषि कार्यों के कारण ही नहीं अपितु गैर कृषि, कार्यकलापों के कारण भी है।

भारत वर्ष एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है और न सिर्फ अर्थव्यवस्था बल्कि सभ्यता और सभ्यता के साथ-साथ विकसित होती चली गयी एक संस्कृति भी है। प्राचीन काल में कृषि विकास के कारण भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था वन चुका था और उसका व्यापार रोम व अन्य यूरोपीय देशों के साथ लगातार बढ़ रहा था। चूंकि कालान्तर में शासकों के आन्तरिक कलह एवं विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप कृषि एवं अन्य आर्थिक क्रियाकलापों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश हुकुमत के अधीन होने के कारण भारतीय कृषि सबसे बुरे दौर में रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भारत वर्ष में गणराज्य की अवधारणा को लागू किया गया तथा देश के सर्वांगीण विकास के कदम उठाये गये। किन्तु इन सबके बावजूद कृषि क्षेत्र की लगातार उपेक्षा होती रही है, जिसका परिणाम आज देश के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र के योगदान के आधार पर कर सकते हैं। जहाँ देश की कुल आबादी का 60: हिस्सा कृषि एवं सम्बन्ध गतिविधियों में प्रयुक्त है लेकिन देश की कुल जीडीपी में इसका योगदान लगातार घट रहा है जो वर्तमान में 12.6 प्रतिशत रह गया है।

विदिशा जिला पूर्णतः कृषि प्रधान जिला है जिसकी लगभग 95 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं इससे सम्बन्धित कार्यों में प्रयुक्त है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं विशेषताओं के आधार पर विदिशा जिले में कृषि भूमि उपयोग एवं फसल उत्पादनों के प्रतिरूपों का अध्ययन किया गया है।

भारत वर्ष में कृषि विकास से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य हुए हैं। जिसमें कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता पर प्रभावों का विश्लेषण मुख्य है। कृषि विकास के अध्ययन के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता तथा कृषि उत्पादन पर प्रभावों को भी ध्यान दिया गया है। जिससे मुख्यतः सिंघ, जे. (1974), डिल्लन (1981), प्रसाद (1981), चौधरी (1975), प्रसाद एवं पोधना (1983) एवं वोस (1968), आदि विद्वानों ने भारत में कृषि विकास के स्तरों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक आधारभूत

सुविधाओं को ध्यान में रखकर कृषि विकास के स्तरों का अध्ययन किया। श्रीवास्तव (1983) ने कृषि विकास के 8 सूचकों को आधार मानकर जिलेवार कृषि विकास के प्रतिरूपों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। साथ ही विकास के स्तरों के आधार पर मध्यप्रदेश को कृषि विकास के अनेक स्तरों में विभाजित किया है। यादव एवं मिनोचा (1987), ने मध्यप्रदेश में कृषि प्रौद्योगिकी विस्तार को ज्ञात करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय पद्धतियों का उपयोग करके कृषि तकनीकी विस्तार का अध्ययन किया है। बोरकर (2016) ने भारत वर्ष में कृषि उत्पादन, उत्पादकता एवं भूमि उपयोग के प्रतिरूपों का अध्ययन करने के लिए अनेक चरों का उपयोग किया है तथा कृषि विकास के स्तरों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

शोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र में विदिशा जिले में कृषि भूमि उपयोग एवं खाद्यान्न उत्पादन की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जावेगा, जिसमें निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. विदिशा जिले में कृषि भूमि शुद्ध बोया गया क्षेत्र, सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र के प्रतिरूपों का अध्ययन करना,
2. जिले में खाद्यान्न उपजों के अंतर्गत भूमि उपयोग के प्रतिरूपों का अध्ययन करना,
3. जिले में खाद्यान्न उत्पादन के प्रतिरूपों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि एवं तकनीकों का चयन –

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिसका संकलन मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित वार्षिक सांख्यिकीय पुस्तिका तथा जिला सांख्यिकीय पुस्तिका से किया गया है। इसके साथ ही अन्य शासकीय प्रतिवेदनों से भी समक संकलित किये गये हैं।

प्रस्तुत शोध पत्रों के निष्कर्षों के लिए अनेक सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है। विशेषकर वृद्धि दर एवं प्रतिशत हिस्से का।

1) वृद्धि दर

जहाँ, C = चालू वर्ष में उत्पादन

P = पिछले वर्ष में उत्पादन

$$2) \text{ प्रतिशत हिस्सा} = \frac{P}{T} \times 100$$

जहाँ, P = किसी एक उपज का उत्पादन

T = कुल उपज का उत्पादन

(विभिन्न चरों के आधार पर अलग-अलग)

विदिशा जिले में कृषि भूमि शुद्ध बोया गया क्षेत्र, सिंचित एवं अंसिंचित क्षेत्र के प्रतिरूप वर्ष 2000-01 से 2014-15 तक

विदिशा जिले में वर्ष 2000-01 में 5,32,861 हैक्टेयर भूमि में कृषि उपजों का उत्पादन किया गया था, किन्तु शोध अवधि में अर्थात् वर्ष 2002-03 में बढ़कर 5,41,966 हैक्टेयर हो गया था, किन्तु शोध अवधि में अर्थात् वर्ष 2000-01 से 2014-15 तक शुद्ध बोये गये क्षेत्र में विशुद्ध रूप में कमी होती रही है।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2000-01 से 2014-15 तक की समयावधि में पड़ती भूमि में निरंतर कमी आयी हैं जहाँ वर्ष 2000-01 में 6862 हैक्टेयर भूमि पड़ती थी वह 2004-05 में 5794 हैक्टेयर तथा 2009-10 में 5270 हैक्टेयर हो गयी। इसी प्रकार वर्ष 2014-15 में 3948 हैक्टेयर भूमि पड़ती थी। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पड़ती भूमि में लगातार कमी आयी है। दूसरी और द्विफसली क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रही है। जहाँ वर्ष 2000-01 में 94461 हैक्टेयर भूमि द्विफसली की वर्ष 2005-06 में बढ़कर 131859 हैक्टेयर तथा 2009-10 में 239677 हैक्टेयर हो गयी। इसी प्रकार वर्ष 2014-15 में बढ़कर 364881 हैक्टेयर हो गयी।

खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल के प्रतिरूप –

विदिशा जिले में खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि गेहूँ उत्पादन में सर्वाधिक भूमि उपयोग हो रहा है तथा यह लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2000-01 में जहाँ गेहूँ के अंतर्गत 208434 हैक्टेयर भूमि का उपयोग हुआ था। वह 2006-07 में 213502 हैक्टेयर हो गया।

धान के उत्पादन के अंतर्गत भूमि उपयोग प्रारम्भिक अवधि में अत्यंत कम था किन्तु यह लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2000-01 में कुल 698 हैक्टेयर भूमि पर धान का उत्पादन किया जा रहा है या वही 2005-06 में 619 हैक्टेयर 2009-10 में 576 हैक्टेयर तथा 2014-15 में 2459 हैक्टेयर में धान का उत्पादन किया जा रहा था।

मक्के का उत्पादन के अंतर्गत भूमि में एक दो वर्षों को छोड़कर सम्पूर्ण शोध कार्य अवधि में मक्के के अंतर्गत क्षेत्रफल में कमी आयी हैं वर्ष 2000-01 में मक्के के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 5141 हैक्टेयर था। जो 2005-06 में बढ़कर 5774 हैक्टेयर हो गया किन्तु 2009-10 में घटकर 4665 हैक्टेयर हो गया और 2014-15 में पुनः घटकर 3315 हैक्टेयर हो गया। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गेहूँ के अंतर्गत क्षेत्रफल में अधिक वृद्धि हुई है तथा मक्के के अंतर्गत क्षेत्रफल में लगातार कमी आयी है।

विदिशा जिले में दलहन एवं तिलहन उपजों के तहत कृषि भूमि उपयोग के प्रतिरूप –

विदिशा जिले में मुख्यतः दलहन उपजों में चना, तुअर एवं उड़द का स्थान है। उपरोक्त तीनों उपजों में सर्वाधिक उपज चने की है जो कुल भूमि का लगभग 98 प्रतिशत पर उत्पादित की जाती हैं

जहाँ वर्ष 2000-01 में 190594 हैक्टेयर में उत्पादन किया जा रहा था। जबकि तुअर 708 हैक्टेयर एवं उड़द 1001 हैक्टेयर में ही उत्पादित की जा रही थी। वर्ष 2008-09 में चने का क्षेत्रफल बढ़कर 233758 हैक्टेयर हो गया इसी अवधि में तुअर एवं उड़द के क्षेत्रफल में भी वृद्धि हुई जो बढ़कर 1448 हैक्टेयर एवं 35140 हैक्टेयर हो गया। वर्ष 2014-15 में चने एवं तुअर के क्षेत्रफल में कमी आयी तथा उड़द के तहत क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। जहाँ चने का क्षेत्रफल घटकर 134554 तथा तुअर का क्षेत्रफल 868 रह गया वही उड़द का क्षेत्रफल बढ़कर 53848 हैक्टेयर हो गया।

विदिशा जिले में तिलहनी उपजों में मुख्यतः सोयाबीन एवं मूंगफली है। सोयाबीन सर्वाधिक तिलहन उपजों में शामिल है शोध समयावधि 2000-01 से 2014-15 तक के अध्ययन के आधार पर यह कह सकते हैं कि सोयाबीन की उपज कुल तिलहन उपजों में सर्वाधिक है, जहाँ वर्ष 2000-01 में यह 115873 हैक्टेयर में उत्पादित की जा रही थी। वह बढ़कर 2007-08 में 180345 हैक्टेयर तथा 2014-15 में पुनः बढ़कर 325727 हैक्टेयर हो गयी है। दूसरी और मूंगफली के तहत क्षेत्रफल में निरंतर कमी एवं वृद्धि होती रही है। वर्ष 2000-01 में 652 हैक्टेयर में मूंगफली का उत्पादन किया जा रहा है या जो 2007-08 में घटकर 541 हैक्टेयर हो गया। इसी प्रकार 2014-15 में पुनः घटकर 186 हैक्टेयर हो गया है।

विदिशा जिले में खाद्यान्न उत्पादन के प्रतिरूप –

विदिशा जिले में खाद्यान्न उपजों के उत्पादन के प्रतिरूपों का अध्ययन करने पर पाया कि जिले में गेहूँ की उपज सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपज है अन्य खाद्यान्न उपजों में मक्का दूसरी महत्वपूर्ण उपज हैं चावल की उपज जिले में सबसे कम हैं वर्ष 2000-01 में 283.2 हजार मि.टन गेहूँ का उत्पादन किया गया था जो शोध समयावधि में लगातार बढ़ता जा रहा है। वर्ष 2004-05 में बढ़कर 335.2 हजार मि.टन हो गया तथा 2014-15 में 775.5 हजार मि.टन हो गया। इस प्रकार जिले में सर्वाधिक खाद्यान्न उपजों में गेहूँ का महत्वपूर्ण स्थान है। चावल का उत्पादन जिले में सबसे कम होता है। वर्ष 2000-01 में 0.4 हजार मि.ट. था जो 2014-15 में बढ़कर 5.25 हजार मि.टन हो गया है। इसी प्रकार ज्वार का उत्पादन भी जिले में कम होता है। वर्ष 2000-01 में 7.0 हजार मि.ट.था जो वर्ष 2005-06 में 6.6 हजार मि.टन तथा 2014-15 में 1.38 हजार मि.ट. हो गया। जिले में दूसरी मुख्य उपज मक्का भी है जो चावल एवं ज्वार की तुलना में अधिक है।

विदिशा जिले में दलहन एवं तिलहन उत्पादन के प्रतिरूपों का अध्ययन –

जिले में दलहन एवं तिलहन उत्पादन के प्रतिरूपों का अध्ययन करने पर पाया कि जिले में चना एवं उड़द मुख्यतः दलहन उपज हैं वही तुअर एवं मूंग का उत्पादन नगण्य है। वर्ष 2000-01 में जहाँ 176.5 हजार मि.टन चना उत्पादित किया गया वही 2005-06 में बढ़कर 205.8, 2011-12 में 191.70 तथा 2014-15 में 173.83 हजार मि.ट. उत्पादित किया गया। दूसरी और उड़द का उत्पादन वर्ष 2008-09 से लगातार बढ़ रहा है जहाँ वर्ष 2000-01 में मात्र 0.4 हजार मि.ट. उत्पादन था वह बढ़कर 2008-09 में 14.63 वर्ष 2012-13 में बढ़कर 28.16 तथा वर्ष 2014-15 में पुनः बढ़कर 51.91 हजार मि.ट. हो गया है।

' 0.05: पर सार्थक सहसम्बन्ध

" 0.01: पर सार्थक सहसम्बन्ध

प्रतीपगमन – विश्लेषण सारणी

आश्रित चर –खाद्यान्न उत्पादन

स्वतंत्र चर– बैंक के साख, रसायनिक खाद्य, सिंचित क्षेत्रफल (हेक्टेयर) टैक्टर्स (अंको में)

बीजोपचार (मि.ट.) औसत वर्षा (मि.मी.)

संदर्भ एवं ग्रन्थ सूची –

1. जिला सांख्यिकी पुस्तिका विदिशा 2001 – 20015
2. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय म.प्र.
3. दत्त रुद्र एवं के.पी.एम. सुन्दरम "भारतीय अर्थव्यवस्था" एस चन्द्र एण्ड कंपनी लिमि. नई दिल्ली 2002
4. मिश्रा एस.के. एवं वी. के. पुरी "भारतीय अर्थव्यवस्था" हिमालया पब्लिशिंग हाउस मुम्बई 2007
5. Singh j. (1974) : Regional evience & Temporal developement in irrigation Facilities in Haryan Geographical Review of Inida Val. 36,(2) PP.102 - 113.
6. Dhillan, S.S. (1981) : A Techniqe for measuring the degree of agriculture profit ability the Geographical Journal of india, Vol. 43 (3) PP . 248 - 256
7. Prasad, A.G. (1981) : Labour productivity in Agriculture : A Study in inter districts variation Andrapradesh , India Journal of Reginal Science, Vol. 13(1) pp.22-27
- 8- Choudhary, R.N. (1975) Productive Potentiol of the Principal crops of west Bangal, The Geographical Review of india Val. 34(3) PP. 259-263
- 9- Prashad, A.G.N. , Pouthana,V.(1983) : high yeilding Technology & productivity a Study in

intra state variance in Andrapradesh , I J R S, Val.15 (2) PP.80-88.

10. Boss, A .N. (1968): Economics Development and balanced Regional Growth , I J R S , Vol. (1) PP. 37-52
11. Shrivastava, Snehlata (1983) : Regional Disparities in Agriculture develoment in Madhya pradesh, I J P S , Vol. 15(2) PP .55-66.
12. Yadav. Hanuman singh and minocha, A.C.(1987) Special defition of modern agriculture technology in Madhya Pradesh , IJRS Vol.19 (2) PP.65-80
13. Broker Arun (2016) : Pattern of crop Production and Land use in India, International Journal of comprehensive research in economics Vol. 2, PP. 38-41

MENTAL HEALTH AND AYURVEDA

Dr.Ritu Singh
Assistant Professor
K.V Ayurvedic Medical
College and Dev
Hospital, NH-2, Kuberpu

Dr. Mahendra Singh
Associate Professor

ABSTRACT

Ayurveda is science of life & has its own identity as most ancient & traditional system of medicine. It deals with Sharira, Aatma, Manas which are necessary for maintenance of physiological and psychological balances. Ayurveda defines health as state of equilibrium of tridosha, trimala, saptadhatu and homoeostasis of mind as well as sense organs. Both physical fitness and mental health are part and parcel of healthy body, depending and influencing each other. Nowadays life has become so fast that everybody is just found in hurry with their work which has direct impact on health leading to various mental disorders. The majority of mental disorders are due to stress and mood disturbances; mostly they are anxiety, depression and often mixed type. Imbalance of tridosha and satva, rajah, tamah are the root cause of all mental disturbances. Mental disorders are significant contributor to the global burden of disease and affects people in all communities across the world. Ayurveda deals with four aspects of lifestyle which ensures good health These include ahara, vihara, achara and vichara. Aachar rasayana, sadvrutta, yoga are helpful to maintain proper mental health as well as to tackle mental illness. Ayurveda emphasizes its treatment modalities into three parts in which Sattvavajaya Chikitsa is utmost important for mental health. In today's lifestyle of hurry worry and curry, stress is increasing day by day. Ayurveda and Yoga if practiced in daily life has excellent results, preventive as well as curative.

INTRODUCTION

Ayurveda is an ancient Indian system of medicine. It deals with the whole life of human being starting from birth to end of life because Ayurveda describes the art of living & it is a science of life that reveals what is appropriate as well as auspicious for a happy and long life. It covers not only for strengthening the physical power of the body but also principles of spiritual as well as mental development. It stresses principally on preservation and promotion of health, & prevention & cure of diseases through the concepts of positive physical & mental health. Ayurveda believes in the treatment of an individual as a whole. The real value of Ayurveda lies in its basic principles, including its unique concepts of Panchamahabhuta (Five elements), Prakriti (Constitution), Guna (Quality), Rasa (Taste), Agni (Gastric fire), Dosha (Humour), Dhatu (Tissues), Mala (Faeces), Srotas (Channels), and its personalized approach to Nidan, Cikitsa and Rasayana. 1 Ayurveda is inherently a psychological as much as it is a physical system of medicine. Its scope of practice includes both physical (Sharirika) and mental (Manasika) diseases. According to Charaka Samhita, Ayu itself is the combination of the body, sense organs, mind & soul. 2

AYURVEDA AND PSYCHOSOMATICS

"Health is a state of complete physical, mental and social wellbeing and not merely an absence of disease or infirmity." This definition has three dimensions of health, physical, mental and social. It rules out the mere absence of disease and stands with a broad definition of health encompassing all three dimensions of health. Similarly Sushruta, one of the great proponents of Ayurveda defined health in his classical treatise called Sushrut Samhita. 3

The hymn can be understood as per the following description; "sama dosha" (balanced humour), "samagnischa" (balanced enzymes and metabolites), "sama dhatu" (balanced tissue system), "malakriya" (state of excretory functions), "prasanna" (ecstasy), "atmendriya manah" (soul, sense organs and mind), "swasthya iti abhidhiyate" (called as healthy state). Ayurveda is based on the principle of Dosha, Dhatu, Mala, and Agni. Health is the outcome of the harmonized state of these factors whereas the opposite leads to ill health. The Ayurvedic philosophy explained health is not just an absence of disease; it is achieved when there is perfect balance of all three Doshas, Satva, Atma, Sharira. Satva, Sharira, Atma are tripod of life. If

one is disturbed, the whole life is in turmoil. When the Satva is in good state, it generates positive feelings but if the mind is not healthy then the body-mind apparatus gets imbalanced. Development of mind in man made him superior to other living beings. It also acts as a link or bridge between the materialistic world and spiritual world. Half a century ago the idea that the mind has the power over the functions and diseases of the body was regarded as laughable. Today it is generally accepted as a fact, although its implications are still largely neglected. It is realized that in human beings physical symptoms can be due to a state of mind and that the alterations in the state of a mind may be in itself sufficient to relieve the symptoms. Due to improper diet and actions, the natural state of the mind may disturb and the positive feelings may drive out. As a result negative feelings like anger, jealousy, cruelty, drowsiness can take place and may lead to mental disorders. So it is easily understandable Satva, Sharira and Atma are tripod of life. 4 That's why the emphasis of "mind" in Ayurveda is more practical and realistic in the areas of health and healing and touching the day to day life of people.

TREATMENT:

MANASAVIKARA CIKITSA (Treatment of mental disorders)

Ayurvedic treatment for the mitigation of the diseases has always been through "holistic approach" while it has only recently ushered in the west as big movements in the field of treatment.

Ayurveda recommends three types of chikitsa viz.

- 1) Daivavyapasraya chikitsa (divine or spiritual/therapy),
- 2) Yuktivyapasraya chikitsa (logical therapy), and
- 3) Satwavajaya chikitsa (psycho therapy), for treating mental illnesses as well. 5

1. Daivavyapasraya chikitsa: This refers to measure like mantra, (incantation), ausadhi (wearing scared herbs), mani (wearing precious gems), mangala (propitiatory rites), bali (oblations), homa (sacrifice), upahara (offerings), niyama (vows), prauascitta (ceremonial penitence), upavasa (fasts), swastyayana (prostrations), pranipata (surrender), gamana (pilgrimage), etc. 6 These measures are recommended in mental disorders caused by agantuk (extraneous) factors and administered judiciously after considering the nature, faith, religiosity, culture and educa-

tional level, of the patient. (Ch. Shi. 9/93-4). These may be useful in all types of manasavikara, i.e. both psychosis and neurosis.

2. Yuktivyapasraya chikitsa: This refers to the use of ahara aushadha and dravya yojana. Under ahara, different food articles like ksira, ghrta , draksa, panasa, brahmi , mahishamamsa, sarpamamsa, kurmamamsa, vastuka , kakamaci, barhimamsa, mahakusmanda, kapittha matulunga and others are recommended as beneficial in various mental disorders. 7 Recently according to an Ayurvedic physician cuckoo meat is found to be useful in certain mental disorders. 8 Thus, these and other descriptions available in the classics on ahara particularly in relation to mental disorders are worthy of scientific study.

Under drug therapy, it is said that, in all types of mental diseases where vata, pitta and kapha are deranged, dosha shodhana or srota suddhi has to be done by adopting various sodhana . When the cleaning is properly done, samanausadha and rasayana are given in order to bring back the deranged manas to normalcy. 9

The following are some of the Ausadha (medicines), rasayana (tonics) and upakrama (treatment processes) that are being used in treating various mental disorders.

Medicines Tonics

- " Brahmi ghrta
- " Aswagandha
- " Kalyanakaghrta.
- " Kusmandarasayana
- " Pancagavya ghrta
- " Cyavanaprasa
- " Sarasvatarista
- " Brahmi Rasayana
- " Asvagandharista
- " Asvagandhavaleha
- " Sarasvata curna
- " Satavari leha
- " Smritisagara rasa
- " Caturmukha rasa
- " Manasamitra vataka

- " Brahmyadiyoga
- " Ksirabala taila
- " Dhanvantara taila
- " Asanabilvadi taila
- " Brahmi
- " Tagara
- " Vaca
- " Sarpagandha
- " Jatamamsi
- " Bala

Treatment processes:

- " Virecana (purgation)
- " Basti (enema)
- " Nasya (nasal instillation)
- " Abhyanga (analing)
- " Takradhara/Ksiradhara/tailadhara, Kasayadhara (streaming of medicated buttermilk/milk/oil/decoction on the forehead of the patient)
- " Mastishka (application of medicated wet cakes on the head)
- " Sirolepa (application of medicated wet cakes on the vertex)

3. Satvavajaya chikitsa: The aim of this therapy is to restrain mind from desire for unwholesome objects. 10 This permits considering, occupational, behavioural and like therapies as well, since the ultimate aim of them also would be to restrain mind from unwholesome objects. Speaking on the role of the therapist, it is stated that, the therapist should be 'suhrit' 11 implying that he should be compassionate to the patient and involve himself in solving the problems of the patient. This clearly indicates the importance of the therapist if the therapy administered has to be beneficial to the patient. The best approach to achieve the goal of Satvaajaya chikitsa, is through jnanam (knowledge), vijnanam (analytical thinking), dhairya, (courage), smriti (memory), and samadhi (concentration), According to Charaka. 12 mental disorders causes by kama (excessive desire) soka (grief), bhaya (fear) krodha (anger), harsa (delight), irsya (jealousy), moha (agreed) should be countered by

inducing the opposites passion in order to neutralize the causative ones. 13
The above two approaches can be said to be more useful in manasaroga caused on account of certain external psychological reasons which refer to certain man-asavikara related to neurotic conditions. Apart from these, measures like calming the patient with assurances and words of religious and moral import, shocking him by announcing the loss of something he holds or showing him some wonderment, threatening him by physical torture have been mentioned . 14 These are more useful in nanatmaja and manasariradhithita manasa vikara or certain psychotic conditions. The underlying principle is to create fear of physical torment which the patient may not like to bear, and fear of death, which is the strongest of all fears, in order to provide insight to the patient to regain mental equipoise. These are more applicable in excitatory conditions where disciplining that patient becomes unavoidable. Needless to add that these measures were told centuries ago considering the conditions that prevailed in that society. We may modify them suitably and perhaps find their underlying principles useful even today.

DISCUSSION:

After reviewing the literature, we can see that the definition of health given by Acharya Sushruta "Prassana Atma, Indriya and Mana beside the equilibrium of Dosha, Dhatu and Mala as Swastha." fulfills every aspects of healthy being which clearly establishes the importance of mental health. Today's fast and unstable life style has given money but has taken a large toll on physical and mental health of human. Especially mentally the person become exhausted in young and seeks for salvation. Various mental disorders had bubbled out of life, which both financially and socially had become burden on once life. In Ayurvedic classics a routine for nearly everything is described in either detail or briefly.

CONCLUSION

In today's lifestyle of hurry worry and curry, stress is increasing day by day. Modern medicines on the one hand are, no doubt good for short term treatment but having many untoward effects and having their own limitations. Ayurveda and yoga if

practiced in daily

life has excellent results, preventive as well as curative. In fact Aachar rasayana is of greater relevance in today's highly mobile society than it was when first proposed by our stalwart Acharya.

REFERENCES

1. Bhusan Patwardhan- Ayurveda for all: 11 action points for 2011. J Ayurveda Integr Med. 2010 Oct-Dec; 1(4): 237-239.
2. Charaka Samhita, Sutrasthan 1/42, pageno. 13, by pt. Kasinath Sastri, Dr.Gorakha Nath Chaturvedi withElaborated Vidyotini Hindi Commentray Part-I Published by Chaukhambhabharati Acrdemy Varanasi,Reprint year 2005
3. Acharya YT, editor. Susrutha Samhitha of Susrutha with Dalhana Tika. Varanasi: Chaukhambha Orientalia; 1992. (Sushrut, Sutrasthan 15/48)
4. 4. Charaka Samhita, Sutrasthan 1/47,page no. 18, by pt. Kasinath Sastri, Dr. Gorakha Nath Chaturvedi withElaborated Vidyotini Hindi Commentray Part-I Published by Chaukhambha bharati Acrdemy VaranasiReprint year 2005
5. Chatterjee-Acharya-Paradhkar., "My experiments with Cuckoo meat", Journal of Research in Indian Medicine, Vol. VII, No.2, 79 to 81. (1972)
6. Acharya "Charakasamhita", Nirnayasagar Press, Bombay, 470. (1941).
7. Ibid, Page, 77.
8. Ibid, Page, 473.
9. Ibid, Page, 16.
10. Ibid, Page, 474.
11. Ibid, Page, 473 474
12. Ibid, Page, 50.
13. Ibid, Page, 383, 384
14. As against 1.
15. Susruta Samhita Sutrashan 15/48, pageno.64, by Kaviraja ambikadutta Shastri A.M.S. with "Ayurveda-Tattva-Sandipika" Hindi Commentary Part-I Edition Reprint (2007) Published by Chaukhambha Sanskrit Sansthanveranasi.

महिलाओं में अपराध के कारण

शोधार्थी अमृतासिंह बुंदेला
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

राजश्री शास्त्री
प्रो. समाज शास्त्र
एक्सीलेंस कॉलेज
भोपाल (म.प्र.)

नारी प्रकृति की अनमोल रचना— नारी, ना+री इन दो शब्दों से मिलकर बना यह शब्द है जिसमें सागर की तरह गहराई है, जो संसार की सृजनकर्ता है, जिससे समाज का अस्तित्व जुड़ा है। नारी को पत्नि के रूप में एक सहयोगी के रूप में, बच्चों की प्रथम गुरु के रूप में ही देखा गया है। भारत में उसे शक्तिरूपा दुर्गा, धन रूपा लक्ष्मी तथा ज्ञान रूपा सरस्वती के रूप में पूजा गया है, अतः तक नारी को त्याग, बलिदान, क्षमा, ममता, दया की देवी के रूप में ही देखा गया, लेकिन यदि वर्तमान पर नजर डालें जो उसका एक नया रूप भी सामने आया है, अपराधी का। जहाँ एक ओर यह सत्य है कि उसके अधिकारों का हनन भी किया गया, पर्दाप्रथा, प्रतिप्रथा, देवदासी आदि प्रथायें उसकी दशा को स्वयं दर्शाती है। जहाँ आज ग्लोबलाइजेशन के युग में नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिये गये हैं, उसके विकास के लिए संविधान में भी उसके अधिकार सुरक्षित किये गये हैं, वहीं दूसरी ओर उसके साथ भयंकर आमानवीय कृत्यों का सामना भी करना पड़ रहा है, जो एक बहुत ही गंभीर समस्या समाज के लिये बनी हुयी है। नारी स्वयं भी अपराधी कृत्यों में भाग लेने लगी है, बढ़ती दहेज हत्याएँ वैश्यावृत्ति आदि अपराध नारी द्वारा के प्रति होते हैं। स्वतन्त्रता: आधुनिकता आर्थिक मूल्यों के प्रति झुकाव, स्वावलंबता, पाश्चात्यता ये ऐसे गुण हैं, जिन्होंने एक ओर सकारात्मक और दूसरी ओर नकारात्मक प्रभाव समाज पर डाले हैं। आधुनिकता की इस भागमभाग में बनारी अपने प्राकृतिक गुण दया, मानवता ईमानदारी, परस्वार्थताखोकर आज अपराधी जगत का एक अटूट हिस्सा बनती जा रही है नारी को अपराधी जगत में धंकेलने के कई कारण हैं, जिनसे वह अपराधी दलदल में फंसती जा रही है, जिससे समाज की विघटन की प्रक्रिया और भी तीव्र हो गयी है, अतः एक तत्व जो संपूर्ण समाज में दृष्टिगोचर हो रहा है, वह है, अपराध।

महिलाओं में अपराध के निम्नलिखित कारण हैं:-

1. **नारी स्वतंत्रता**— आधुनिक समय में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकारी तथा स्वतंत्रता प्रदान की गयी है। इससे अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ वे अपराध के क्षेत्रों में भी आगे आयी है। विशेषकर महानगरों में यह कारण महत्वपूर्ण है।

2. **स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन**— स्त्रियों की बदलती हुयी सामाजिक स्थिति ने भी महिलाओं

को अपराध करने की ओर प्रवृत्त किया है। जिन देशों में पुरुषों के समान उन्हें स्थिति प्राप्त वहां स्त्रियों में अपराध बढ़े हैं वे पुरुषोचित अपराध जैसे—हत्या, डकैती आदि भी करने लगी हैं।

3.वैवाहिक परिवर्तन— विलंब विवाह, अंतराजातीय विवाह, विवाह की अनिवार्यता समाप्त होने आदि वैवाहिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं के यौन-अपराधों में वृद्धि हुई है। विवाहपूर्ण यौन संबंध कुंवारी मातृत्व स्वीकार करना, बिना विवाह किये पुरुषों से साथ रहना आदि घटनाओं में वृद्धि हुई है। साथ ही विवाह विच्छेदों में भी वृद्धि हुई है जबकि कुछ ही वर्षों पूर्व तक विवाह-विच्छेद या तलाक को भारतीय समाज में लांछनास्पद माना जाता था।

4.जनसंख्या नियंत्रण— जनसंख्या नियंत्रण के साथ-साथ गर्भपात को वैधानिक मान्यता मिलने से स्त्रियों में यौन अपराधों में वृद्धि हुई है।

5.भौतिकवाद— अत्याधिक भौतिकवाद एवं पश्चिमी संस्कृति के कारण स्त्रियों में अपराध बढ़े हैं। श्रृंगार प्रसाधन, फैशन तथा सुख भोग के प्रति बढ़ती लालसा ने स्त्रियों को अपराध की ओर धकेला है। वैश्यवृत्ति में बढ़ोत्तरी, कॉल गर्ल्स का बढ़ता प्रचलन इसी की देन है।

6.मूल्यां का हास —परंपरागत सामाजिक मूल्यां के हास ने भी अपराधों में वृद्धि की है। सिनेमा, टी.वी. आदि प्रसार माध्यमों द्वारा दिखाये जाने वाले दृश्यों को वे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करती हैं। इसी प्रकार चाहे अनचाहे वे भोग विलास का शिकार हो जाती हैं। फैशन के कारण भी उनके कदम अपराध की ओर बढ़ रहे हैं।

7.युद्ध— युद्ध के कारण समाज में स्त्रियों की भूमिका बदल जाती है। उन्हें पुरुषों के कार्य भी करने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में स्त्रियों द्वारा किये जानेवाले अपराधों में वृद्धि होती है। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी, आस्ट्रिया, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में स्त्रियों के अपराधों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई थी।

इस प्रकार महिलाओं द्वारा किये जाने वाले अपराधों के कारण पुरुषों के कारणों से भिन्न है।

संदर्भ—

Dutta; A.K. And Venugopal, G. (1983). "Spatial Patterns of Crime among Indian Cities." Geoforum, Vol. 14, No. 2 pp. 223-233 (Quoted in Mohanty Samaundra, 1990, Ibid.)

Galway 'J Edward. (1948)." A Measurement of the Effectiveness of Reformatory Programme," (Unpublished Ph.D. thesis of the Ohio State University,

Gillen, J.L. (1945), Criminology and Penology. New York : D Appleton

Century, P. 221.

Glaser, Deaniel. (1964). The Effectiveness of a Prison and Parole System. New York : The Bobbs Merrill Company, Inc.

Guha Roy, Jain Tilak (1989). Prisons and Society : A Study of the Indian Jail System (Delhi :Cian Publishers,

Haikerwall, S.S. (1934). Economic and Social Aspects of Crime in India. (London : George Allen and Unwin Ltd.,

Healy, Bronner, (1936). New Light on Delinquency and its Treatments, USA, New Haven, Yale Univercity,

Jadhav , D.G. (1995). Modernization of Correction Administration in India. IKLN Reddy Memorial Lecture. Cyclostyled, 9th February. Vellore, Tamilnanu.

Javis D.C. (1978) Institutional Treatment of the Offenders, (London : McGraw Hill Company, pp 51-52.

Johnson, E.H. (1978). Crime, Correction and Society (Illionois : The Dorsey Press, p. 364.

Madan G.R. (1966). Indian Social Problems (Bombay : Allied Publisheres, p. 126.

Mallaih, C.S. Review of Prison System and its Reforms in India-A Short History, Cyslostyled.

Merton, T. (1966). 'The dilemma of Prison Reforms, New York : Halt, Renhart and Dinstou,

Miller; W.B. Lower (1962). :Jail for 1811 to 1859 : A Resume" Social

Defence, Vol XXI, No. 84, April.

Mohanty and Hazary. (1990). Indian Prison System. (New Delhi : Ashish Publishers.

Mohanty, Amarendra and Narayan Hazary. (199), Indian Prison System (New Delhi : Ashish Publication,

Mohanty, Das, Pujar: (1988) " Convicted Murderers and their Attitude towards the Prison Vocational Programmes", Indain Journal of Criminology, Vol. 16, No.2 July, pp. 119-125.

Mohanty, Samaradra, Chambliss, W.J. (1990). Functional and Conflict Theories of Crimes in Chambliss And Mankart, 'Whose Law ? What Order?' John Wiley and Sons, Now York.

Mohanty Samarendra (1990). A Paper Presented at the Conference of Social Work, Bombay 1967 (Quoted in 1990)

Mohanty, P. Samarendra. (1990). Crimes and Criminals. (New Delhi : Ashish Publishing House,

Nagaraj R (1992), unpublished Ph.D. thesis " A Sociological Study of Prison Community in Mysore". P. 13

अपराधी महिलाओं को पुनः मुख्यधारा में लाने का उपाय

शोधार्थी अमृतासिंह बुंदेला
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

राजश्री शास्त्री
प्रो. समाज शास्त्र
एक्सीलेंस कॉलेज
भोपाल (म.प्र.)

अपराध से घृणा करों अपराधी से नहीं। महात्मा गांधी का यह कथन मानवताकारी यथार्थ का प्रतीक है। जिसको साधन बनाकर हम विकृत मानवों को भी पुनः सामाजिक धारा में जोड़ सकते हैं और यह पुनः सामाजिककरण प्रक्रिया संतुलित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में सहायक है। अपराधी महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिये निम्न कदम उठाये जा सकते हैं।

1. सुधारगृह की दैनिक गतिविधियों को सुभाषित कर उन्हें सामाजिक मुख्यधारा के अनुसार बनाकर ।
2. सुधारगृह में नैतिक शिक्षा सहयोग एवं अभिप्रेरणात्मक सेमीनारों का आयोजन किया जाये।
3. मनोवैज्ञानिक द्वारा सुधार के स्तर तथा निरंतर काउंसलिंग के माध्यम से ।
4. महिलाओं में कौशल विकास, लघु उद्योगों में संलग्न किया जाय। आर्थिक आत्मनिर्भरता के माध्यम से ।
5. खुली जैल की अवधारणा का और अधिक विस्तार किया जाय ताकि वह मुख्यधारा में निरंतर संपर्क साध सके।
6. विधिआयोग की रिपोर्ट पर शीघ्र विचार किया जाये। विचाराधीन कैदियों को मुक्त कर उनका पुनः सामाजिककरण कर ।
7. महिलाओं एवं बाल विकास मंत्रालय के प्रतिवेदन को क्रियान्वयन महिला कैदियों की स्थिति की सुधार के लिए रामबाण होगा।

● स्वास्थ्य संबंधी सुधार ।

● पोषण संबंधी सुधार।

● कौशल विकास ।

● आर्थिक आत्मनिर्भरता ।

● पुनः सामाजिकरण ।

8. आजीवन कारावास वाली महिलाओं के लिये प्रथक रणनीति बनाकर उनके श्रम एवं कौशल तथा मानव संसाधन का सदुपयोग किया जाना चाहिए।

9. मानवाधिकार आयोग एवं विभिन्न गैर सरकारी अभिकर्ता, गैर सरकारी संगठनों की सहायता से भी यह कार्य संपन्न किया जाना चाहिए। आर्थिक, सामाजिक, नैतिक क्षेत्र में ।

इस प्रकार संभव हो सकता है कि इन महिलाओं को पुनः अपराध करने से रोक सकेंगे और इन्हें एक जिम्मेदार सामाजिक नागरिक बना सकेंगे।

संदर्भ:—

Dutta; A.K. And Venugopal, G. (1983). "Spatial Patterns of Crime among Indian Cities." Geoforum, Vol. 14, No. 2 pp. 223-233 (Quoted in Mohanty Samaundra, 1990, Ibid.)

Galway 'J Edward. (1948)." A Measurement of the Effectiveness of Reformatory Programme," (Unpublished Ph.D. thesis of the Ohio State University,

Gillen, J.L. (1945), Criminology and Penology. New York : D Appleton Century, P. 221.

Glaser, Deaniel. (1964). The Effectiveness of a Prison and Parole System. New York : The Bobbs Merrill Company, Inc.

Guha Roy, Jain Tilak (1989). Prisons and Society : A Study of the Indian Jail System (Delhi :Cian Publishers,

Haikerwall, S.S. (1934). Economic and Social Aspects of Crime in India. (London : George Allen and Unwin Ltd.,

Healy, Bronner, (1936). New Light on Delinquency and its Treatments, USA, New Haven, Yale Univercity,

Jadhav , D.G. (1995). Modernization of Correction Administration in India. IKLN Reddy Memorial Lecture. Cyclostyled, 9th February. Vellore, Tamilnanu.

Javis D.C. (1978) Institutional Treatment of the Offenders, (London : McGraw Hill Company, pp 51-52.

Johnson, E.H. (1978). Crime, Correction and Society (Illionois : The Dorsey Press, p. 364.

- Madan G.R. (1966). Indian Social Problems (Bombay : Allied Publisheres, p. 126.
- Mallaih, C.S. Review of Prison System and its Reforms in India-A Short History, Cyslostyled.
- Merton, T. (1966). 'The dilemma of Prison Reforms, New York : Halt, Renehart and Dinstou,
- Miller; W.B. Lower (1962). :Jail for 1811 to 1859 : A Resume" Social Defence, Vol XXI, No. 84, April.
- Mohanty and Hazary. (1990). Indian Prison System. (New Delhi : Ashish Publishers.
- Mohanty, Amarendra and Narayan Hazary. (199), Indian Prison System (New Delhi : Ashish Publication,
- Mohanty, Das, Pujar: (1988) " Convicted Murderers and their Attitude towards the Prison Vocational Programmes", Indain Journal of Criminology, Vol. 16, No.2 July, pp. 119-125.

बालिकाओं में अपराध के कारण

अमृतासिंह बुंदेला (शोधार्थी)
समाज शास्त्र विभाग
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

डॉ.जश्री शास्त्री
प्रो. समाज शास्त्र
एक्सीलेस कॉलेज
भोपाल (म.प्र.)

वर्तमान परिदृश्य में बढ़ते आधुनिकीकरण और परंपरागत संस्थाविक उद्देश्यों विरोधाभास की स्थिति प्रतीत होती है जो सामाजिक विचलन की स्थिति को सृजित करती है, यह सामाजिक विचलन की स्थिति समाज में अपराध की दर को बढ़ावा देती है।

कई विचारकों का मानना है कि विचलन और अपराध एक सामान्य सामाजिक प्रघटना है परन्तु बढ़ती असमान्य आपराधिक दर सामाजिक व्यवस्था के साक्ष्य को विकरत करती है। वर्तमान समय में बालिकाओं में भी इन्हीं अपराध के बढ़ती समस्याओं के कारण है।

1. परंपरा एवं आधुनिकीकरण की मध्य सामानजस्य न बैठा पाना, विरोधाभासी स्थिति के कारण विचलन की स्थिति।
2. मानव तस्करी तथा किशोर युवतियों अपराध के लिये बाध्य करना।
3. गंदी बस्तियों में रह रही बालिकाओं में विचलन की स्थिति अधिक देखी जाती हैं।
4. संतुलित सामाजिकरण का अभाव एवं पालकों के अभाव के कारण।
5. बढ़ता भौतिकवाद एवं वंचना का भाव भी युवतियों को अपराध की ओर धकेलता है।
6. अपराधित गठबंधन एवं संगठित अपराध इसे बढ़ावा देते हैं।
7. संचार एवं गतिशीलता की साधनों की आसानी से उपलब्धता एवं दुरुपयोग।
8. शिक्षा का अभाव एवं नैतिक पुलिसिंग का अभाव।
9. सुधार गृहों में बालिकाओं को संगीन अपराधियों के साथ रखे जाने पर उनमें आपराधिक प्रवृत्तियाँ और भी बढ़ जाती हैं।
10. नगरीकरण का विकृत स्वरूप जहां अपराधियों का संगठित झुंड कार्य करता है, गरीबी, भूखमरी एवं मजबूरीवश बालिकाओं को अपराधों में धकेल दिया जाता है।
11. बढ़ती नशे प्रवृत्ति एवं सुख साधनों की चाह ने भी आपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है।
12. पुनः सामाजिकरण के प्रक्रिया का निष्क्रिय या अप्रभावी होना। सुधार गृहों में, विद्यालयों में आदि।
13. विद्यालय की विद्याध्यायन की प्रक्रिया में नैतिक शिक्षा का अभाव।
14. किशोर होती बालिकाओं, बच्चों के मनोरंजन के लिये बनाये गये नाटकों एवं मनोरंजन फिल्मों

की हिंसात्मक दृश्यों को दिखाया जाना, जिसके परिणाम स्वरूप वे अपराध के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं।

15. नाभकीय परिवारों की बढ़ती संख्या, संयुक्त परिवारों में कमी, जिससे बच्चों के कार्यविधियों की उपयुक्त देख रेख नहीं हो पाती और उनके वांछित मूलों को समाहित नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार कई सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक परिस्थिति जन्म कारकों के कारण बालिकाओं में अपराध की दर बढ़ती जा रही है, जो चिंता का विषय है।

संदर्भ:-

- Dutta; A.K. And Venugopal, G. (1983). "Spatial Patterns of Crime among Indian Cities." Geoforum, Vol. 14, No. 2 pp. 223-233 (Quoted in Mohanty Samaundra, 1990, Ibid.)
- Galway 'J Edward. (1948)." A Measurement of the Effectiveness of Reformatory Programme," (Unpublished Ph.D. thesis of the Ohio State University,
- Gillen, J.L. (1945), Criminology and Penology. New York : D Appleton Century, P. 221.
- Glaser, Deaniel. (1964). The Effectiveness of a Prison and Parole System. New York : The Bobbs Merrill Company, Inc.
- Guha Roy, Jain Tilak (1989). Prisons and Society : A Study of the Indian Jail System (Delhi :Cian Publishers,
- Haikerwall, S.S. (1934). Economic and Social Aspects of Crime in India. (London : George Allen and Unwin Ltd.,
- Healy, Bronner, (1936). New Light on Delinquency and its Treatments, USA, New Haven, Yale Univercity,
- Jadhav , D.G. (1995). Modernization of Correction Administration in India. IKLN Reddy Memorial Lecture. Cyclostyled, 9th February. Vellore, Tamilnanu.
- Javis D.C. (1978) Institutional Treatment of the Offenders, (London : McGraw Hill Company, pp 51-52.
- Johnson, E.H. (1978). Crime, Correction and Society (Illionois : The Dorsey Press, p. 364.
- Madan G.R. (1966). Indian Social Problems (Bombay : Allied Publisheres, p. 126.
- Mallaih, C.S. Review of Prison System and its Reforms in India-A Short History, Cyslostyled.
- Merton, T. (1966). 'The dilemma of Prison Reforms, New York : Halt, Renehart and Dinstou,
- Miller; W.B. Lower (1962). :Jail for 1811 to 1859 : A Resume" Social Defence, Vol XXI,

No. 84, April.

Mohanty and Hazary. (1990). Indian Prison System. (New Delhi : Ashish Publishers.

Mohanty, Amarendra and Narayan Hazary. (199), Indian Prison System (New Delhi : Ashish Publication,

Mohanty, Das, Pujar: (1988) " Convicted Murderers and their Attitude towards the Prison Vocational Programmes", Indian Journal of Criminology, Vol. 16, No.2 July, pp. 119-125.

Mohanty, Samaradra, Chambliss, W.J. (1990). Functional and Conflict Theories of Crimes in Chambliss And Mankart, 'Whose Law ? What Order?' John Wiley and Sons, Now York.

Mohanty Samarendra (1990). A Paper Presented at the Conference of Social Work, Bombay 1967 (Quoted in 1990)

Mohanty, P. Samarendra. (1990). Crimes and Criminals. (New Delhi : Ashish Publishing House,

Nagaraj R (1992), unpublished Ph.D. thesis " A Sociological Study of Prison Community in Mysore". P. 13

JOB SATISFACTION AND SUCCESS OF THE ORGANIZATIONS

Pragati Choudhary
Research Scholar
Department of Management
Barkatullah University,
Bhopal (Madhya Pradesh)

Dr. Pavan Mishra
Professor
Department of Management
Barkatullah University,
Bhopal (Madhya Pradesh)

Job satisfaction of employees is directly related to success of the organizations. EJSE Report released by the Society for Human Resource Management (SHRM) revealed that proportions of employees satisfied with their current jobs considerably increased being 89 percent two years back in 1916 from its earlier figures being at 80 percent in 2013. The reasons behind this possibly were improving economy that provides space for salary hikes, benefits and perks. Moreover, due to globalization, new policies, stabilized economy and market job seekers found new opportunities for jobs and positions matching their skills and interests.

Job satisfaction helps retain efficient and useful employees in the organization that create a better environment. Satisfied employees often support organization in its mission and work efficiently to aid in achieving its objectives. Tomozevic and associates (2013) demonstrated that there is need to measure and monitor goals of the organization to enhance job satisfaction among employees however; many organizations are noted to be aware of the importance of the job satisfaction for progress and development.

It is important to add that sometimes job satisfaction and motivation can be confusing terms but they cannot be substitute of each other beside their obvious link. Motivated persons frequently experience satisfaction to a large extent (Chughati and Perveen, 2013). Job satisfaction is not an abstract concept; it is inherent in every aspect of the job and leads to the harmonization of the workers.

Factors affecting Job Satisfaction

Career prospects, personal expectations, job influence, team and job chal-

lenges were demonstrated to be the main factors that influence job satisfaction of an employee in the organization. Other factors involve supervision quality, social bonding with the working group and abilities to perform their work (Wilson, 2010).

Unutmaz (2014) in his thesis finely elaborated and explained the following factors that affect Job Satisfaction:

1. Environmental Factors
2. Working Conditions
3. Self-Improvement
4. Reward
5. Supervision
6. Co-worker
7. Communication
8. Personal Factors
9. Gender
10. Educational Level
11. Seniority

High satisfaction with the job is resulted when employees are well motivated and feel comfortable and committed to the institution where they work and this in turn, become the force that makes the organization successful.

In some studies women were found to show more satisfaction about their job as compared to men (Tang et al. 2002). They have different expectations at workplace and because of wide work-related segregation; women might have little chances to compare their jobs with the men working at common workplace (Tietjen and Myers, 1998).

Socio-demographical Factors and Job Satisfaction

Ghinetti (2007) stated that factors like education, marital status, job position and even unemployment rate are involved in labour economic theory and remain some important determinants of job satisfaction as socio- demographical factors.

Clark (1997) asserted that people having leading positions and long tenure most probably show high degree of job satisfaction hence; these socio-demographic indicators are often positively connected to job satisfaction. Bryan and Sell (2011) also supported this view and demonstrated that education status, wages and unemployment rate are mutually entwined. Wages remain high for a person who has high education and this increases job satisfaction. On the other hand, there may be high expectations relating to job content leading to likelihood of dissatisfaction with the job.

A number of studies revealed that employees with lower education were more satisfied as compared to the employees who had higher education level (Blanchflower and Oswald, 1999). Education increases inspirations of people and when outcome does not accord inspiration it leads to dissatisfaction

The Connection between Work Motivation and Job Satisfaction

Motivation and Job satisfaction are integrated in one area of organizational theory (Pardee, 1990). The connection between job satisfaction and work motivation is presented in both academic studies and applied practice. Many motivation theories are also the foundation for job satisfaction research such as Maslow's hierarchy of needs.

There is positive relationship between job satisfaction and motivation of employees. Enhancement in job satisfaction of employee results in improved motivation at work place that further enhances efficiency with better job performance (Kaur, 2013).

Motivated and satisfied employees show enhanced commitment towards their institution and employer. Hence, the connection between motivation and satisfaction is demonstrated by the commitment employees show towards their employer institution. This reveals that motivation with job satisfaction finally come to commitment of an employee.

Motivation theory does not explain whole behavior theory. Motivations remains only one set of determinants of behavior whereas, behavior is eternally motivated and has its roots in situation, biology and cultural environment of an individual (Maslow, 1943).

Though, motivation in the people may change as the economy goes up or

down. Employees may be less confident about their job security in tough time of an organization which affects their motivation required for sound job performance in the organization. It is believed that job security remains one of the most helpful factors on job motivation for it prevents employees from future anxiety.

Andrew and Kent (2007) asserted that employee motivation requires both extrinsic and intrinsic awards from their management which on occasion pays less attention to intrinsic rewards. Intangible or psychological rewards like admiration and recognition from management side can lead to motivation among employees that in turn increases their performance.

The link between motivation and job satisfaction among employees has been demonstrated by many academicians and alleged that work motivation and job satisfaction should be considered as separate entities ((Heneman et al. 1988; Igalens and Roussel, 1999). Pool (1997) affirmed the association between motivation and job satisfaction and disclosed major positive association signs revealing that job satisfaction increases with work motivation

Bibliography

- Andrew, D. and Kent, R. (2007): The Impact of Perceived Leadership Behaviors on Satisfaction, Commitment, and Motivation: An Expansion of the multidimensional model of Leadership. *International Journal of Coaching Science*, 1(1): 35-56.
- Blanchflower, D.G. and Oswald, A.J. (1999): Well-Being, Insecurity and the Decline of American Job Satisfaction. Working Paper University Warwick, Dartmouth College, USA and National Bureau of Economic Research Department, University of Warwick, UK. Retrieved from: <http://www.dartmouth.edu>
- Bryan, C. and Sell, L. (2011): Job Satisfaction, Work Environment, and Rewards: Motivational Theory Revisited. *Labour*, 25(1), 1-23.
- Chughati, F. D., & Perveen, U. (2013). A Study of Teachers Workload and Job Satisfaction in Public And Private Schools At Secondary Level in Lahore City Pakistan, 2(1), 202-214.
- Clark, A.E. (1997): Job Satisfaction and Gender: Why are women so Happy at Work? *Labour Economics*, 4(4), 341-372.

- Ghinetti, P. (2007): The Public-Private Job Satisfaction Differential in Italy. *Labour*, 21(2), 361-388.
- Kaur, A. (2013): Maslow's Need Hierarchy Theory: Applications and Criticisms. *Global Journal of Management and Business Studies*, 3(10): 1061-1064.
- Maslow, A. H. (1943). A Theory of Human Motivation. *Psychological Review*, 50(4), 370-96.

Andrew and Kent (2007)
Blanchflower and Oswald, 1999
Bryan and Sell (2011)
Chughati and Perveen, 2013
Clark (1997)
Ghinetti (2007)
Kaur, 2013
Maslow, 1943
Pardee, 1990
Tang et al. 2002
Tietjen and Myers, 1998
Tomozevic and associates (2013)
Unutmaz (2014)
Wilson, 2010

SAVE GIRL'S AND CHILD'S

Raj yadav

Research Scholar

BCA BRANCH 3rd YEAR

Nri Institute Of

Information Science And

Technology(VISMT)

Introduction

Girls have been the victim of many crimes in India for years. The most fearful crime was female foeticide in which girls were killed in the womb of mother after sex determination through ultrasound. Save the girl child campaign has been launched by the government to end the gender-selective abortions of female fetus as well as other crimes against girl child.

Indian is a "Male Dominated Society" hence women are the receiving end. They are always will treated and ill-treated at every step. As a matter of fact, a girl child is under constant, vigil initially by the parents, then her husband and finally her own children. She is never allowed to dwell and survive freely. Worst of all she is often killed before being born while in mother's womb itself. This is foetus killing or infanticide. This is the gross downfall of humanity, morality and the values.

Effects of Female Foeticide on Girl Child Ratio Reduction

Female foeticide was one of the most fearful acts through sex-selective abortion in the hospital. It was developed in India by the people's more interest in the boy child than the female child. It has reduced the girl child sex ratio in India to a great extent. It was made possible in the country because of the Ultrasound technology. It took a form of giant demon because of the gender discrimination and inequality for girls in the society. A huge reduction in the female sex ratio was noticed after the national census of 1991. Then it was declared as a worsening problem of the society after the national census of 2001. However, reduction in female population was continued till 2011. Later, this practice was banned strictly by the government in order to

control the ratio of female child. In Madhya Pradesh, the ratio was 932 girls/1000 boys in 2001 however reduced to 912/1000 in 2011. It means, it still continues somewhere and may be it reduced to 900/1000 by 2021.

Role of Beti Bachao Beti Padhao awareness Campaign

Beti Bachao, Beti Padhao is a scheme which means save the girl child and educate the girl child. This scheme was launched by the government of India on 22nd of January in 2015 in order to generate awareness for girl child as well as improve the welfare of women. This campaign was launched by organizing some activities such as large rallies, wall paintings, television commercials, billboards, short animations, video films, essay writing, debates, etc in order to aware more people of the society. It also involved some famous celebrities for more awareness. This campaign is supported by the various government and non-government organizations in India. This scheme has played a great role in spreading awareness regarding save girl child all over the county as well as improving the status of girl child in the Indian society. The human society is like a cart. The God has created man and woman as the two wheels of this society cart. Those two wheels are made for each other. For the human race to exist and survive, both of the wheels must be functional else the society collapses.

In nutshell all must be kind to women with high degree of love and respect to them. There is no life without a wife and there can't be a wife in absence of girl. Considering all the facts above, save the girl child in the interest of humanity. Saving baby girls shall minimise crime and build a powerful nation.

Conclusion

Each and every citizen of the India must follow all the rules and regulations made for saving the girl child as well as improving the position in the society. Girls should be considered as equal as boys by their parents and given same opportunities in all the working areas.

Refrence-

Data Highlights - 2001 Census Census Bureau, Government of India

^ India at Glance - Population Census 2011 - Final Census of India, Government of India (2013)

^ Census of India 2011: Child sex ratio drops to lowest since Independence The Economic Times, India

<https://www.importantindia.com/27515/paragraph-on-save-girl-child/>